1 कुरिन्थियों अध्याय 11

रविवार, 03 नवम्बर 2019

मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के विषय को संबोधित करने के बाद, प्रेरित पौलुस अब दो अन्य विषयों को संबोधित करता है जो कुरिन्थियों की कलीसिया में व्यवस्था को बिगाड़ रहे थे।

ईश्वरीय परंपराओं को बनाए रखना (11:1,2)

1 तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।
2 हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूँ कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो; और जो परम्पराएँ मैं ने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पालन करते हो।

पौलुस ने यह शिक्षा समाप्त की कि मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के विषय में लोगों के साथ सही प्रकार से कैसे व्यवहार किया जाए। उसने अपने जीवन से यह साझा किया कि कैसे वह कुछ लोगों को बचाने के लिए सब लोगों के लिए सब कुछ बन गया (9:22) और कि हर बात में वह लोगों को ठेस पहुँचाने के बजाय उन्हें आशीष देने का प्रयास करता है, ताकि लोग उद्धार पा सकें (10:33)। इसके बाद पौलुस कुरिन्थियों को आमंत्रित करता है कि वे उसकी नकल करें, जैसे वह स्वयं मसीह की नकल करता है। अर्थात, 'जैसे मैं मसीह का अनुसरण करता हूँ, वैसे ही तुम मेरा अनुसरण करो।'

यह एक शक्तिशाली कथन है जो आत्मिक नेतृत्व के सार को दर्शाता है। लोगों को हमारा अनुसरण करना है, ठीक वैसे ही जैसे हम मसीह का अनुसरण करते हैं। हमें केवल लोगों को मसीह के विषय में सिखाना ही नहीं है, बल्कि लोगों को हमारे जीवन में मसीह को देखने देना भी है।

इसके बाद पौलुस उनकी प्रशंसा करता है कि वे उन परंपराओं (विधियों, उपदेशों, सौंपे गए निर्देशों, जो उन्हें सिखाए गए थे) को बनाए हुए हैं, जिन्हें उसने उन्हें दिया था। यद्यपि वह स्पष्ट रूप से यह नहीं बताता कि ये परंपराएँ क्या थीं, फिर भी संभावना है कि इनमें प्रभु भोज और जल बपतिस्मा की प्रथा सम्मिलित थी।

इसके बाद पौलुस स्त्रियों के सिर ढकने के विषय और प्रभु भोज में उचित सहभागिता के विषय में बात करता है।

इस शास्त्र के इस भाग (11:3-34) को समझने का प्रयास करते समय हमें यह भेद करना आवश्यक है कि कौन-सा सत्य का प्रकाशन है, जो हर समय सम्पूर्ण कलीसिया पर लागू होता है, और कौन-सी बातें केवल कुरिन्थ से सम्बन्धित सांस्कृतिक विषय हैं। हमें उस प्रकाशन (सत्य) को स्वीकार करना चाहिए जो आज हम पर लागू होता है, बिना उस समय की सांस्कृतिक बातों को आज के विश्वासियों

पर थोपे। इस भेद को स्पष्ट करने का एक तरीका यह है कि हम देखें कि शेष शास्त्रों में, विशेष रूप से नए नियम के विश्वासियों के लिए क्या प्रस्तुत किया गया है, और कौन-से विषय विशेष रूप से केवल कुरिन्थियों के विश्वासियों के लिए संबोधित किए गए थे।

पवित्रशास्त्र के अन्य स्थानों में संबोधित (विशेष रूप से नया नियम)	विशेष रूप से कुरिन्थियों की कलीसिया के लिए संबोधित
आत्मिक नेतृत्व (Spiritual Headship)	**सिर ढकना (Head Covering)**
1 कुरिन्थियों 11:3	1 कुरिन्थियों 11:5-16
इफिसियों 5:22-23, 33	
कुलुस्सियों 3:18	
1 तीमुथियुस 2:11-15	
तीतुस 2:4-5	
1 पतरस 3:1-6	
प्रभु का भोज	**प्रभु भोज खाते-पीते समय अनुचित व्यवहार**
1 कुरिन्थियों 11:23-32	1 कुरिन्थियों 11:21-22, 33-34
1 कुरिन्थियों 10:16	
मत्ती 26:26-29	
प्रेरितों के काम 2:42, 46	
प्रेरितों के काम 20:7	
स्त्रियाँ प्रार्थना कर सकती हैं, भविष्यद्वाणी कर सकती हैं, प्रचार कर सकती हैं	**कलीसिया की सभाओं में स्त्रियों का चुप रहना (विशेष रूप से कुरिन्थ और इफिसुस के लिए)**
1 कुरिन्थियों 11:5	1 कुरिन्थियों 14:34
प्रेरितों के काम 2:17-18	1 तीमुथियुस 2:11-12
प्रेरितों के काम 21:8-9	

रोमियों 12:4-8	
1 कुरिन्थियों 14:1, 5, 31(यहाँ "सब" में पुरुष और स्त्रियाँ दोनों सम्मिलित हैं)	
इफिसियों 4:8,11 ("मनुष्य" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *'anthropos'-'ऐंथ्रोपोस'* है, जिसका अर्थ मानव जाति है)	

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि जहाँ आत्मिक नेतृत्व (हेडशिप) से संबंधित आत्मिक सत्य नए नियम के अन्य स्थानों में भी प्रस्तुत किया गया है, वहीं सिर ढकने का विषय विशेष रूप से कुरिन्थियों की स्थानीय कलीसिया के लिए था। उसी प्रकार, प्रभु का भोज स्वयं प्रभु यीशु द्वारा दिया गया था और कलीसिया द्वारा इसका अभ्यास किया जाता था, जबकि प्रभु भोज में भाग लेते समय अनुचित व्यवहार करना एक ऐसा विषय था जो विशेष रूप से कुरिन्थियों की कलीसिया में समस्या बना हुआ था।

पार्श्व टिप्पणी: इसके अतिरिक्त, यहाँ अध्याय 11 में यह भी कहा गया है कि कुरिन्थ में स्त्रियाँ प्रार्थना कर सकती थीं और भविष्यद्वाणी कर सकती थीं (11:5), यद्यपि सिर ढककर। इसलिए बाद में (14:34) जब पौलुस कुरिन्थियों की स्त्रियों को चुप रहने की शिक्षा देता है, तो इसका अर्थ यह नहीं निकाला जा सकता कि उन्हें प्रार्थना या भविष्यद्वाणी नहीं करनी थी, बल्कि यह उनके प्रश्न पूछने से संबंधित था। जब हम अध्याय 14 पर आएँगे, तब इस विषय को संबोधित करेंगे।

आत्मिक नेतृत्व और सिर ढकना (11:3-16)

3 परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।
4 जो पुरुष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है।
5 परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है।
6 यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिये बाल कटाना या मुण्डन कराना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े।
7 हाँ, पुरुष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा है।
8 क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है;
9 और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है।
10 इसी लिये स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।
11 तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है।
12 क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं।
13 तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना शोभा देता है?
14 क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान है।
15 परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे तो उसके लिये शोभा है, क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिये दिए गए हैं।
16 परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।

- **वचन 3:**

परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

यहाँ हम आत्मिक अधिकार (या 'हेडशिप') से संबंधित सत्य का प्रकाशन देखते हैं।

'सिर' शब्द (यूनानी *kephalē-केफाले*) का उपयोग यहाँ रूपक के रूप में किया गया है, जो अधिकार, नेतृत्व या शासन को दर्शाता है।

पुरुष (यूनानी *anēr-अनेर*) का अर्थ किसी भी पुरुष से हो सकता है या विशेष रूप से पति से।
स्त्री (यूनानी *gunē-गुने*) का अर्थ किसी भी स्त्री से हो सकता है या विशेष रूप से पत्नी से।

"स्त्री का सिर पुरुष है": इसे हमें विशेष रूप से एक विवाहित स्त्री के संदर्भ में समझना होगा, क्योंकि उसका सिर विशेष रूप से उसका पति होता है (इफिसियों 5:22,33)। यह स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में भी लागू होता है, जहाँ स्त्रियाँ नियुक्त अगुवे के अधीन रहती हैं। (इसे सामान्य रूप से हर स्थिति में लागू करना अनुचित होगा; उदाहरण के लिए, यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि 60 वर्ष की एक स्त्री किसी अनजान 25 वर्ष के पुरुष के अधीन हो।)

"हर पुरुष का सिर मसीह है": यह प्रत्येक विश्वास करने वाले पुरुष पर लागू होता है।

"मसीह का सिर परमेश्वर है": यह परमेश्वर पिता की ओर संकेत करता है।

इस प्रकार हम पुरुष और स्त्री के बीच इस आत्मिक नेतृत्व (हेडशिप) के संबंध की गतिशीलता को उपरोक्त संदर्भ में समझते हैं, और इसी प्रकार मसीह और मनुष्य (और मसीह और कलीसिया) के बीच के संबंध को भी, उस परम और सर्वोच्च उदाहरण को देखकर, जो मसीह और परमेश्वर (पिता) के बीच है।

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा—तीनों समान रूप से परमेश्वर हैं। पुत्र, अर्थात अनन्त वचन, स्वयं परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1)। फिर भी, परमेश्वर पुत्र ने स्वेच्छा से अपने आप को पिता के अधीन कर दिया, जिससे हमारा महान उद्धार संभव हो सका। उसके इस स्वेच्छापूर्ण अधीन होने के कारण, पिता ने उसे अत्यन्त महिमान्वित किया।

पुरुष और स्त्रियाँ समान हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के सह-वारिस हैं (1 पतरस 3:7), और मसीह में न तो पुरुष है और न स्त्री में कोई भेद-भाव है (गलातियों 3:28)। जैसा कि पौलुस स्वयं 1 कुरिन्थियों 11:11-12 में कहता है, पुरुष और स्त्री एक-दूसरे पर निर्भर हैं। फिर भी, विवाह के संदर्भ में, पत्नी स्वेच्छा से अपने पति के अधीन होती है। उसी प्रकार, स्थानीय कलीसिया में, जहाँ कहीं पुरुष नेतृत्व नियुक्त किया गया है, वहाँ स्त्रियाँ स्वेच्छा से उस नेतृत्व के अधीन रहती हैं। (इसका अर्थ यह नहीं है कि कलीसिया में स्त्रियाँ नेतृत्व में नहीं हो सकतीं, जैसा कि ऊपर दी गई तालिका में अन्य स्थानों से स्पष्ट है।)

विश्वासी पुरुष स्वयं भी अपने जीवन में मसीह की प्रभुता के अधीन स्वेच्छा से रहता है, और इस प्रकार मसीह के उदाहरण का अनुसरण करता है।

अब पौलुस का उद्देश्य यह है कि यह अधीनता, यह परमेश्वर द्वारा नियुक्त आत्मिक नेतृत्व की अभिव्यक्ति, और परमेश्वर के शासन की यह व्यवस्था स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में प्रकट हो।

कुरिन्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ऐसी थी कि सामान्यतः स्त्रियों के लंबे बाल होते थे, परन्तु एक विवाहित स्त्री अपना सिर ढकती थी, जबकि वेश्या प्रायः अपने बाल कटवाए या मुँडवाए होती थी। इसलिए हम कल्पना कर सकते हैं कि स्थानीय कलीसिया में विभिन्न प्रकार की स्त्रियाँ थीं—कुछ ऐसी भी जो ऐसे ही जीवन की पृष्ठभूमि से उद्धार पाकर आई थीं। इसलिए उनकी सांस्कृतिक परिस्थिति और उनके अतीत की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, पौलुस सभी स्त्रियों को यह निर्देश देता है कि वे स्थानीय कलीसिया में प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करते समय अपना सिर ढकें।

- **वचन 10:**

इसी लिये स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।
पौलुस आगे यह स्पष्ट करता है कि आत्मिक अधिकार (हेडशिप, परमेश्वर के शासन) के प्रति इस अधीनता की अभिव्यक्ति इतनी महत्वपूर्ण क्यों है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के लिए यह ठहराया है कि वे कलीसिया के द्वारा सीखें। पौलुस यह बात अन्य स्थान पर भी कहता है: *"ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए।"* (इफिसियों 3:10)

- **वचन 16:**

परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।

यह वचन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि सिर ढकने की प्रथा कुरिन्थियों की कलीसिया के लिए विशेष रूप से लागू एक रीति थी।

<u>पार्श्व टिप्पणी:</u> हमें यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि स्त्री का पुरुष के अधीन होना विशेष रूप से परिवार और कलीसिया के संदर्भ में बताया गया है। इसे कार्यस्थल पर लागू नहीं किया जाता, जहाँ नेतृत्व उसी को दिया जाता है जो सबसे अधिक उपयुक्त (कुशल, योग्य) हो।

प्रभु का भोज (11:17-34)

17 परन्तु यह आज्ञा देते हुए मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिये कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है।
18 क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो तो तुम में फूट होती है, और मैं इस पर कुछ–कुछ विश्वास भी करता हूँ।
19 क्योंकि दलबन्दी भी तुम में अवश्य होगी, इसलिये कि जो लोग तुम में खरे हैं वे प्रगट हो जाएँ।
20 अत: तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु–भोज खाने के लिये नहीं,
21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, इस प्रकार कोई तो भूखा रहता है और कोई मतवाला हो जाता है।
22 क्या खाने–पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है

उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूँ? नहीं, मैं प्रशंसा नहीं करता।
23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैं ने तुम्हें भी पहुँचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली,
24 और धन्यवाद करके तोड़ी और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है : मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"
25 इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"
26 क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।
27 इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा।
28 इसलिये मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।
29 क्योंकि जो खाते–पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।
30 इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।
31 यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते।
32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।
33 इसलिये, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो।
34 यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खा ले, जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। शेष बातों को मैं आकर ठीक करूँगा।

प्रभु भोज के समय अव्यवस्था (Disorder During Communion)

कुरिन्थियों की कलीसिया, यद्यपि एक बहुत ही आत्मिक लोगों का समूह थी, फिर भी उनमें अनेक समस्याएँ थीं जिन्हें संबोधित किए जाने की आवश्यकता थी—विशेष रूप से नैतिक मानकों, कलीसिया की सभाओं में आचरण, और एक संयुक्त समुदाय के रूप में साथ रहने के क्षेत्रों में। इसका एक भाग प्रभु के भोज को मनाने में उनके व्यवहार से संबंधित था। इसे श्रद्धा के साथ और आत्मिक अर्थ के साथ मनाने के बजाय, यह कलीसिया की सभा में दावत, खाने और पीने का समय बन गया। उन्होंने इसे एक साथ भोज करने का अवसर बना लिया, जबकि पौलुस कहता है कि वे ऐसा घर पर कर सकते थे। जिसे प्रभु ने अत्यन्त श्रद्धा, और उनकी मृत्यु, पुनरुत्थान तथा शीघ्र आगमन की आत्मिक घोषणा के समय के रूप में ठहराया था, वह एक साधारण दोपहर के भोजन की तरह बन गया।

परिणामस्वरूप, मसीह के क्रूस के लाभ, आशीषों और सामर्थ्य का अनुभव करने के स्थान पर, इसके विपरीत, ये कुरिन्थी लोग पवित्र भोज का अपमान करके अपने आप को परमेश्वर के न्याय के स्थान में ला रहे थे। इसके परिणामस्वरूप, बहुत से लोग बीमार हो रहे थे, दुर्बल हो रहे थे और समय से पहले मर रहे थे, जबकि उन्हें चंगाई, छुटकारे और सम्पूर्णता के क्रूस के लाभों का आनंद लेना चाहिए था।

प्रभु भोज का उद्देश्य और सामर्थ्य

जिस उद्देश्य से प्रभु भोज दिया गया था, वह यह था कि हम इस पवित्र स्मरणोत्सव में प्रभु की मृत्यु की घोषणा करें, और इस प्रकार यीशु मसीह के क्रूस की सम्पूर्ण आशीषों का अनुभव करें। यह परमेश्वर की योजना है और उसकी इच्छा है। यह उनकी इच्छा नहीं है कि उसके लोग दुर्बल हों, बीमार हों और समय से पहले मर जाएँ।

हर बार जब हम प्रभु भोज में सहभागी होते हैं, हम एक घोषणा करते हैं।

हम क्रूस पर मसीह के पूर्ण किए गए कार्य और उसके फिर से आने में अपने विश्वास की घोषणा करते हैं।

हम यह घोषणा करते हैं कि क्रूस पर:

- हमारे सारे पापों का पूरा मूल्य चुका दिया गया—इसलिए हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए गए हैं!
- पाप की सामर्थ्य तोड़ दी गई—इसलिए हम पाप के प्रभुत्व से स्वतंत्र हैं!
- यीशु ने हमारी बीमारियाँ उठा लीं—इसलिए उसके कोड़ों से हम चंगे हुए हैं!
- यीशु ने दण्ड को उठा लिया—ताकि हम शालोम, अर्थात सम्पूर्ण कुशलता प्राप्त करें!
- यीशु ने व्यवस्था के श्राप को हटा दिया—ताकि अब्राहम की आशीषें हम पर हों!
- शैतान की सामर्थ्य को नष्ट कर दिया गया—इसलिए हमारे पास शैतान और उसके सभी दुष्टात्माओं पर पूरा अधिकार है!
- हम छुड़ाए गए हैं! हम परमेश्वर की खरीदी हुई निज सम्पत्ति हैं!

यीशु के लहू की एक बूँद भी शैतान के हर कार्य को नष्ट कर देती है।

जो कटोरा हम पीते हैं, वह ऐसा कटोरा है जो यह सारी आशीषें हमारे जीवन में ले आता है। जो रोटी हम खाते हैं, वह उस पूर्ण किए गए कार्य में हमारी सहभागिता है, जिसे मसीह ने हमारे लिए उपलब्ध किया है।

हर बार जब हम रोटी खाते और कटोरे में से पीते हैं, हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा मसीह के पूर्ण किए गए कार्य की सम्पूर्ण आशीषों को हमारे जीवन में लागू करेगा।

प्रभु भोज का अपमान करना

परन्तु जब हम खुले तौर पर उस पवित्र वस्तु का अपमान करते हैं, और इसे बिना आत्म-परीक्षण और प्रभु की देह को समझे केवल दावत का समय बना देते हैं, तब हम परमेश्वर की अभिप्रेत आशीषों को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं। इसके स्थान पर हम परमेश्वर की सुरक्षा से बाहर निकल जाते हैं और अपने आप को दुर्बलता, बीमारी और समय से पहले मृत्यु के प्रति संवेदनशील बना लेते हैं। हम परमेश्वर के न्याय के व्यवहार को दो रूपों में समझते हैं: (A) दैवीय सुरक्षा का हट जाना, और (B) परमेश्वर का इन बातों (दुर्बलता, बीमारी और समय से पहले मृत्यु) को अनुमति देना या इनके द्वारा लोगों का ध्यान आकर्षित करना, ताकि वह हमें फिर से सही मार्ग पर ले आएं। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है, परन्तु तब ऐसा होता है जब हम परमेश्वर की ठहराई हुई योजना से बाहर निकलकर अवज्ञा में चलते हैं। यदि हम स्वयं का न्याय करें और आज्ञाकारिता में चलें, तो हम इन बातों से बच सकते हैं।

कुरिन्थियों की कलीसिया पूरी तरह से अव्यवस्थित हो गई थी और उन्होंने प्रभु भोज को पवित्र सहभागिता के स्थान पर एक दावत बना कर प्रभु भोज का अपमान किया। उनके मामले में यह हुआ कि अवज्ञा के कारण उन्होंने चंगाई, स्वास्थ्य और सम्पूर्णता की अभिप्रेत आशीष को खो दिया, और इसके बजाय अपने आप को दुर्बलता, बीमारी और मृत्यु के प्रति संवेदनशील बना लिया। परमेश्वर ने उन्हें प्रभु भोज को सही रीति से मनाने के मार्ग पर वापस लाने के लिए, अपने दैवीय अनुशासनात्मक व्यवहार के अंतर्गत, इन बातों की अनुमति दी। परन्तु यह उनके लिए, विश्वासियों के रूप में, प्रभु का सामान्य

अनुशासनात्मक व्यवहार नहीं था, बल्कि दैवीय न्याय का एक विशेष मामला था। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के स्वभाव और परमेश्वर के कार्य के विषय में, जैसा कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रकट हुआ है, इन सब बातों के प्रकाश में यह कहना गलत होगा कि जो विश्वासी प्रभु के साथ चल रहा है, उसके लिए कोई बीमारी प्रभु की ओर से ताड़ना है।

आज के विश्वासियों के रूप में, हमें प्रभु भोज में "गलत" रीति से भाग लेने के कारण दुर्बलता, बीमारी या समय से पहले मृत्यु का भय नहीं रखना चाहिए। इसका कारण यह है कि हमें सिखाया गया है कि इसे सही रीति से कैसे करना है। हम जानते हैं कि हर बार जब हम प्रभु भोज में सहभागी होते हैं, तो हमें क्या करना है। ऐसा नहीं है कि परमेश्वर हमारी किसी छोटी-सी भूल की प्रतीक्षा कर रहा है कि हम पर न्याय उंडेल दे! इसके विपरीत, हर बार जब हम प्रभु भोज को मनाते हैं, तो हम परमेश्वर के हृदय को आनन्दित करते हैं और शत्रु के शिविर में भय उत्पन्न करते हैं!

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 03 नवम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 11

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी
लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत
लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें
निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 11*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें
कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. *स्थानीय कलीसिया के रूप में हम कौन-सी ऐसी बातें करते हैं जो हमारी विशेष "रीतियाँ" या "परंपराएँ" हैं, और जिन्हें अन्य स्थानों के विश्वासियों पर लागू भी किया जाना चाहिए—इस पर चर्चा करें।*

2. *प्रभु भोज की सामर्थ्य पर चर्चा करें। यदि संभव हो, तो प्रार्थना करें और लाइफ ग्रुप के रूप में प्रभु भोज में सहभागी हों।*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org